मंथन

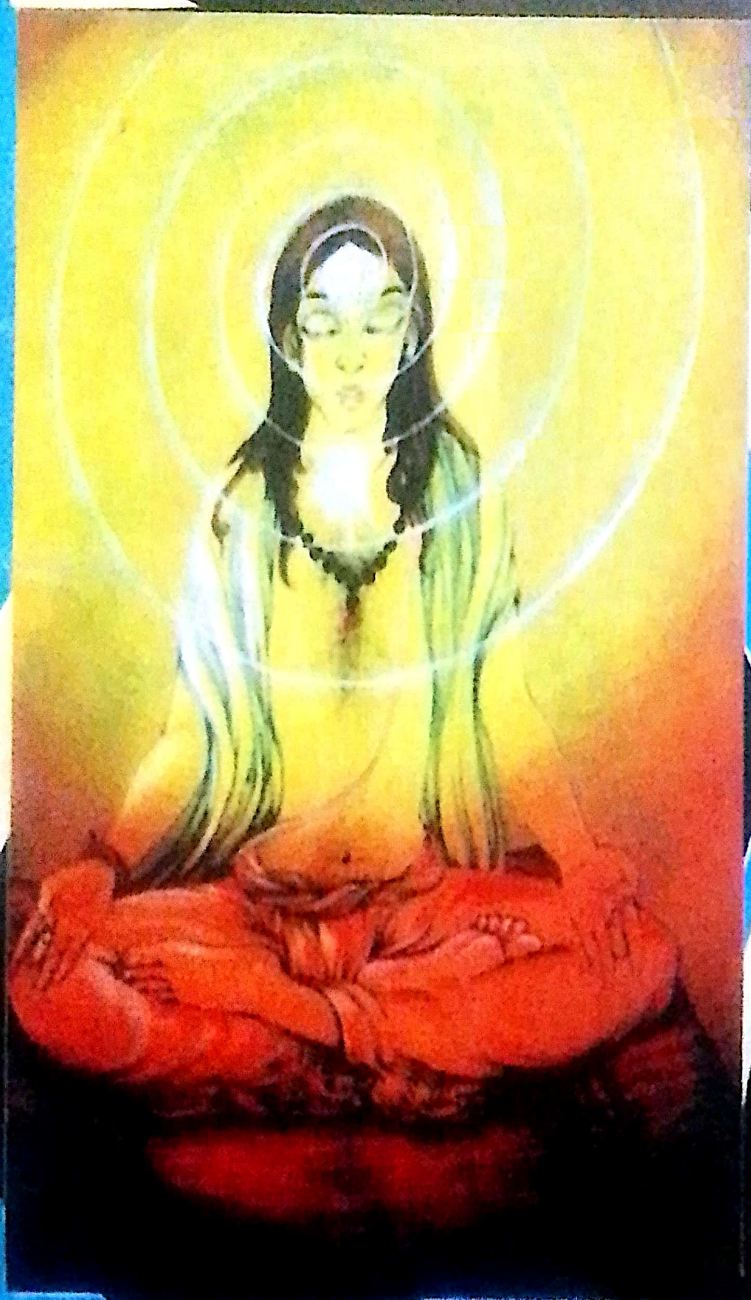

उत्पल

Scanned with OKEN Scanner

मुद्रक :
मर्यादा ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस
काशीपुर (ऊ० सि० नगर)
उत्तराखण्ड

पं० रमेश चन्द्र तिवारी "उत्पल" "विद्या वाचस्पति"
आवास : आदर्श बिहार (वैशाली कालोनी)
काशीपुर-244713 (ऊ० सिं० नगर)
उत्तराखण्ड

कार्यालय :
निखिल मेडीकल स्टोर
ठांडा उज्जैन, काशीपुर (ऊ० सिं० नगर)

सहयोग राशि : रु० 80/- मात्र

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं०
1.	''जय जय शारदे माँ''	1
2.	'गुरू-सत्ता'	2-3
3.	भारतीय संस्कृति	4-5
4.	संस्कार	6-7
5.	श्रेष्ठ देवत्व	8-9
6.	पात्रता	10-12
7.	सच्चा अध्यात्म	13
8.	ईश्वर का प्यार किसे मिलता	14-16
9.	माँ गायत्री	17
10.	दायित्व बोध	18-19
11.	अध्यात्म-विज्ञान	20-21
12.	उद्‌बोधन	22-24
13.	यज्ञ-शिक्षा	25
14.	शिव	26-28
15.	एकता में शक्ति	29
16.	साधना	30
17.	शान्तिकुंज	31
18.	दैवी जागरण	32
19.	जननी पावन प्यार आपका	33
20.	सृजन संकल्प	34
21.	मुक्तक	34
22.	रचना	35
23.	मातृ शक्ति - नारी	36-37
24.	दहेज - एक सामाजिक विकृति	38-39

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं०
25.	जीवन परीक्षा	40-41
26.	परिवर्तन की बेला	42-43
27.	प्रसुप्ति का जागरण	44
28.	प्रभु दिव्य बने मेरा जीवन	45
29.	हिन्दुत्व जाग - हिन्दुत्व जाग	46-47
30.	आधुनिक भक्ति	47
31.	राष्ट्रधर्म	48-49
32.	बक-ध्यान	50-51
33.	महामंत्र गायत्री मन्त्रार्थ	52-55
34.	संध्या षटकर्म	56-57
35.	देव दर्शन	58-60
36.	उपासना - साधना - आराधना	60
37.	गीधों को पावन धाम मिला	61
38.	मिथ्या जगत	62
39.	गुरू वन्दना	63
40.	कुविचार मन में धारण ही दुखप्रद	64
41.	आयो तेरे द्वार	65
42.	स्मृति उस भू की आती है ''होली की टोली''	66
43.	भारतीय संस्कृति के हरीतिमा संवर्द्धन (पर्यावरण संरक्षण)	67-68
44.	जपो मिल मंत्र गायत्री	68
45.	भगवान भक्त घर आते हैं	69
46.	सशक्त सूक्ष्म	70
47.	क्षमा प्रार्थना	71
48.	शुभ कामना	72

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दुत्व जाग - हिन्दुत्व जाग

वर्तमान समय में हिन्दुत्व का जागरण अत्यावश्यक हो गया है। अपने समाज में ऊँच नीच की सामाजिक विकृति मिटाकर हम सब अपने राष्ट्र की प्रगति के लिये एक जुट हो, मातृशक्ति विलासिता एवं आडम्बर भरे अपने जीवन से पग मोड़कर राष्ट्र के नवसृजन में अपना योगदान प्रस्तुत करें -

भारतीय संस्कृति रक्षा हित हिन्दुत्व जाग - 2
बच्चा बच्चा हो बलशाली निज देशभक्त
इस भारत भू पर गायों का ना बहे रक्त।
माँ बहनों की अब लाज न फिर लूटी जाये
हो जाओ जागृत पुनः आज हे देशभक्त।
नूतन प्रभात आ रहा अतः आलस्य त्याग
भारतीय संस्कृति रक्षा हित हिन्दुत्व जाग - 2

मातायें भी कर्तव्य मार्ग पर डट जायें
अभिमन्यु, कृष्ण सम वीर पुत्र फिर जन्मायें।
अवसर आ जाये यदि तलवार उठाने का
लक्ष्मीबाई दुर्गा बन अरि को दहलायें।।
विलासिता आडम्बर का अब करें त्याग
भारतीय संस्कृति रक्षा हित हिन्दुत्व जाग - 2

छुआछूत के भेद भाव को हम मेटें
दलित गरीबों को सीनेसे भर भेंटें।
अपने समाज का और न विघटन हो पावे
हो सुदृढ़, संगठित हम भारत माँ के बेटे।
अरिमर्दन करने हेतु चुनेंगे वेद मार्ग
भारतीय संस्कृति रक्षा हित हिन्दुत्व जाग - 2

Scanned with OKEN Scanner

हो स्वदेश हम सबको प्राणों से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारी आँखों का तारा।
उत्कृष्ट, साहसी, वीर इन्द्र हम बांके हैं
था कौन धरा पर वीर न जो हमसे हारा।
माँ की रक्षा हित खेलेंगे हम रक्त फाग
भारतीय संस्कृति रक्षा हित हिन्दुत्व जाग - 2

आधुनिक भक्ति

आज हमारे समाज में जैसी व्यवसायिकता परक मानसिकता बन गयी है, उसी दृष्टि से हम परमसत्ता से व्यवहार करते हैं। उनको भी हम कुछ नाम जप, पूजा तप आदि कृत्यों में जो समय, श्रम और धन लगाते हैं। उसके बदले में व्यक्तिगत स्वार्थ एवं अहंता की पूर्ति हेतु बड़े-बड़े वरदान चाहते हैं। प्रस्तुत मुक्तक में आधुनिक भक्ति का दर्शन करें-

भक्ति के नाम पर खिलवाड़ ऐसी रात दिन करते
स्वर्ग मुक्ति के वरदानों कावैभव हाथ लग जाये।
मनौती मानकर प्रभु को समर्पित दस का एक सिक्का
विपुल सम्पत्ति चमत्कारी जखीरा हाथ लग जाये।

Scanned with OKEN Scanner

शुभ कामना

कल्याण सभी का हो जग में, हो शासक सद्बुद्धि वाले।
न्याय के मार्ग पर चल करके शासक सब जनता को पालें।
जाग्रत हो सब में दिव्य दृष्टि, सब परम लक्ष्य अपना जाने।
जग के कण-कण में विद्यमान, दैवी सत्ता को पहचाने।।
हो दृष्टि सुविकसित सब जग की सबके हित में निज हित देखें।
पर-सुख में ही हों सुखी और पर दुख में अपना दुःख देखें।
'उत्पल' देवत्व जगे नर में स्वर्गिक सुःख धरती पर लावें।
सम्पूर्ण विश्व सुख शान्ति युक्त कोई प्राणी ना दुःख पावे।।

Scanned with OKEN Scanner

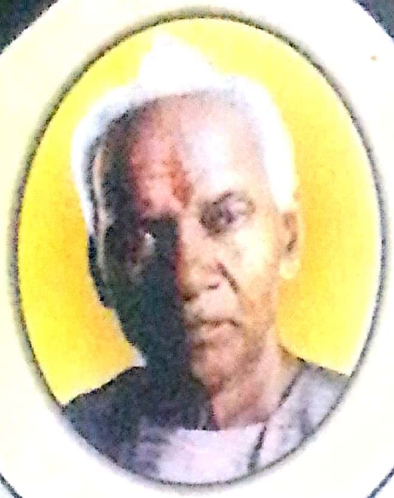

श्री गुरुवे नमः

पा जिनका सान्निध्य बना जड़ जीवत चेतन
गला अहं का शिखर, चला परमारथ चिंतन।
श्री सद्गुरु के चरणों का सादर कर वंदन
प्रभु चरणों में करें समर्पण 'उत्पल' "मंथन"।।

चाहता सर्वस्व निज बलिदान देकर, लोकहित में दीप सा मैं जल उठूँ।
अपने गिलहरी के सदृश पुरुषार्थ से, भटके हुओं का मार्ग ज्योतित कर उठूँ।।
चाहता अज्ञान का तम चीरकर, सर्वत्र ही सद्ज्ञान का आलेक भर दूँ,
उद्घोष करके जागरण के शंख का, सोये उनींदों में पुनः नव प्राण भर दूँ।।

– रमेश चन्द्र तिवारी "उत्पल"

Scanned with OKEN Scanner